INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMIC SOCIAL SCIENCE AND MANAGEMENT LAW
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
E-ISSN : 3070-0558
VOL.7, NO.4 (2026)

विकास की ओर अग्रसर उत्तर प्रदेश की एक झलक

डॉ अशोक बाबू,
विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र,
असिस्टेंट प्रोफेसर,
गवर्मेंट गर्ल्स पीजी कॉलेज,
हमीरपुर

उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ के सत्ता संभालने के पूर्व उत्तर प्रदेश मे जंगल राज माफिया राज था प्रदेश की गिनती देश में बीमारू राज्यों में की जाती थी। श्री योगी जी ने प्रदेश में कानून व्यवस्था का राज्य कायम किया तथा विकास नीतियों में आमूल चूल परिवर्तन किया जिससे आज उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में बहुत उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं आज उत्तर प्रदेश बीमारू अर्थव्यवस्था अथवा राज्य न होकर भारतवर्ष की तीसरी विकसित अर्थव्यवस्था के रूप में उभर कर आया है पहले उद्योगपति उत्तर प्रदेश में विनियोग नहीं करना चाहते थे लेकिन आज उत्तर प्रदेश में विनियोगों का स्तर निरंतर बढ़ता जा रहा है। न केवल भारतवर्ष के उद्योगपति बल्कि विदेशों के उद्योगपति भी भारतवर्ष में उत्तर प्रदेश में विनियोग करने के लिए निरंतर आ रहे हैं प्रदेश की अर्थव्यवस्था मे अमूल चरण परिवर्तन हुए हैं जिसके परिणाम स्वरूप प्रदेश की औद्योगिक विकास की गति बहुत तीव्र हुई है इसके अलावा प्रदेश का 6 वर्ष सेवा क्षेत्र सबसे अधिक विकसित हुआ है पहले उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था कृषि आधारित अर्थव्यवस्था की लेकिन आज सेवा क्षेत्र का योगदान सबसे अधिक है, उसके बाद औद्योगिक क्षेत्र का योगदान है और कृषि क्षेत्र का योगदान प्रतिशत सबसे कम है लेकिन इसका मतलब नहीं है की कृषि क्षेत्र में वृद्धि नहीं हुई है वास्तव मे उत्तर प्रदेश में कृषि क्षेत्र और ग्रामीण विकास मे भी बहुत सारे परिवर्तन हुए हैं और यहां पर भी यह देश का अग्रणी प्रदेश है। आज वर्तमान सरकार के प्रयासों से उत्तर प्रदेश भारत के सबसे तेजी से विकसित हो रहे प्रदेशों में से एक है पिछले एक दशक में प्रदेश की आर्थिक नीतियों के कारण उत्तर प्रदेश में विकसित अप का रोड में बना है और यहां के सभी क्षेत्रों का तेजी से विकास हो रहा है। योगी

आदित्यनाथ ने उत्तर प्रदेश को एक ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है उत्तर प्रदेश में इनफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के विकास पर भी बोल दिया जा रहा है और लखनऊ को इसका मुख्य केंद्र बनने पर जोर दिया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश विजन - 2030

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व मे अवसंरचनात्मक ढांचे के विस्तार औद्योगिक विकास और नीतिगत सुधारो के बल पर वर्ष 2019 तक एक ट्रिलियन डॉलर लगभग 8085 लाख करोड़ की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस लक्ष्य के साथ उत्तर प्रदेश भारत की तीसरी सबसे बड़ी राज्य अर्थव्यवस्था बन गई है। उत्तर प्रदेश विनिर्माण, अवसंरचना और डिजिटल नवाचार के रूप में देश को तेजी से आगे बढ़ा रहा है।

विजन 2030 राज्य के नियोजन विभाग द्वारा तैयार किया गया है। यह एक दीर्घकालीन रणनीतिक रोड मैप है जिसका मुख्य उद्देश्य संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत विकास के लक्ष्य को 2030 तक उत्तर प्रदेश में पूरी तरह लागू करना और विजन 2030 के उद्देश्यों को प्राप्त करना है।

मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य- विजन 2030 के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

आर्थिक विकास- इसमें राज्य की आर्थिक विकास दर को लगभग 9 प्रतिशत तक के ले जाने का लक्ष्य रखा गया है। जिसके लिए बुनियादी ढांचे को मजबूत करना और रोजगार के नए अवसर पैदा करना मुख्य उद्देश्य है।

गरीबी उन्मूलन- ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों के बीच और सामाजिक असमानता को पूरी तरह समाप्त करने के लिए एक बहु आयामी दृष्टिकोण अपनाया गया है।

स्वास्थ्य और कल्याण- स्वास्थ्य मानकों में बड़े सुधार का लक्ष्य ह जिसके तहत नवजात मृत्यु दर को 35 से घटकर द्वारा और मात्र मृत्यु दर को 2 से 85 से घटकर 70 पर लाने की योजना है इसके साथ ही 50 परमाणु को स्वास्थ्य बीमा कर देने और सभी सार्वजनिक सेंटो को भारतीय सार्वजनिक स्वास्थ्य मानकों के अनुसार बनाने का लक्ष्य

ऊर्जा और हरित परिवर्तन- स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा देते हुए 35000 मेगावाट और ऊर्जा क्षमता हासिल करने का लक्ष्य कृषि और पर्यावरण सस्टेनेबल खेती बायो फर्टिलाइजर और सॉइल वाटर मैनेजमेंट ल को बढ़ावा दिया जा रहा है साथ ही ग्रीन यूपी मिशन के अंतर्गत राज्य में वन और हरित क्षेत्र को बढ़ाने का संकल्प है।

एमएसएमई और कौशल विभाग महिलाओं दिव्यांगों और वंचित वर्ग के लिए बड़े पैमाने पर कौशल विकास कार्यक्रम चलाना और राज्य के लगभग 70 लाख एमएसएमई उद्योगो को मजबूत करना सुशासन योजनाओं की प्रगति को समीक्षा करने के लिए एक सैटेलाइट सेंट्रलाइज्ड केंद्रीय केंद्रीय कृत मॉनिटरिंग डैशबोर्ड और डिजिटल पब्लिक सर्विसेज का विस्तार किया गया है जिसमे राज्य के 16 मुख्य विभाग मिलकर मिलकर कार्य कर रहे है।

उत्तर प्रदेश विजन 2030 अर्थात एक ट्रिलियन डॉलर वाली अर्थव्यवस्था के लक्ष्य को प्राप्त करने के प्रमुख विकास स्तम्भ निम्नलिखित है-

1. कौशल विकास केंद्र और राज्य सरकारों के विभिन्न कौशल विकास विभागों के प्रयासों को पंजीकृत करना और व्यावसायिक कौशलों में रोजगार उन्मुख प्रशिक्षण प्रदान करना।
2. निवेश प्रोत्साहन औद्योगिक विकास की गति को देखकर और अनुकूल व्यावसायिक माहौल बनाकर उत्तर प्रदेश को निवेश के लिए सबसे प्रसिद्ध गंतव्य के रूप में स्थापित करना।
3. पर्यटन क्षमता वाले विभिन्न स्थलों पर धार्मिक पर्यटन विकसित करना पर्यटक रुचि के क्षेत्र को विकसित करना और बेहतर मार्ग सुविधा प्रदान करना।
4. सूचना प्रौद्योगिकी आईटी को आर्थिक विकास के लिए एक वाहन के रूप मे उपयोग करना।
5. उत्तर प्रदेश को निवेश के लिए पसंदीदा गंतव्य के रूप में स्थापित करना।
6. ऊर्जा क्षेत्र मे निवेश करने और निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए निजी इकाइयो को आमंत्रित करना। सौर ऊर्जा का उपयोग करके राज्य में स्वच्छ और हरित बिजली के उत्पादन और उपभोग को प्रोत्साहित करना।

7. कृषि उत्पादकता वृद्धि के लिए किसानों को लाभदायक खेती के लिए प्रेरित करना। प्रशिक्षण नेटवर्क प्रदर्शन और संदर्भ सामग्री आदि के विकास के माध्यम से किसानों तक उन्नत तकनीक पहुंचाना।
8. समाज कल्याण के अन्तर्गत आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों को बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना।
9. शहरी गरीबी को आवास प्रदान करना एवं आसान पुर्न विकास कार्यक्रम चलाना।
10. लखनऊ मे मेट्रो रेल का निर्माण करना विश्व मानकों के अनुरूप राज्य मार्गों का विकास, प्रबंधन और रखरखाव करना सड़कों का विकास करना। ग्रामीण क्षेत्रों को कनेक्टिविटी प्रदान करना हवाई अड्डो का विकास करना।

उत्तर प्रदेश द्वारा भारत को शक्ति प्रदान करना- विजन 2030 के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश तेजी से विकास कर रहा है। उत्तर प्रदेश इस समय भारत की तेजी से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है। यह न केवल प्रदेश बल्कि पूरे देश को निम्न प्रकार से लाभ/शक्ति प्रदान कर रही है-

1 **उच्चतम विकास दर -** उत्तर प्रदेश विकास दर संकेतों के आधार पर वर्ष 2023-24 मे भारतवर्ष में उच्चतम शिखर पर था। उत्तर प्रदेश की विकास दर वर्ष 2022-23 मे 62% थी जो वर्ष 2023-24 मे तेजी से बढ़कर 19.1% हो गई। भारतवर्ष के प्रमुख राज्यों में विकास दर के समंक निम्न तालिका में प्रस्तुत है-

तालिका संख्या-1

भारतवर्ष के प्रमुख राज्यों में विकास दर का प्रतिशत योगदान सकल घरेलू उत्पाद के आधार पर

क्रम संख्या	राज्य	वर्ष	
		2022-23	2023-24
1	उत्तर प्रदेश	6.9	19.1
2	असम	19.5	15.01
3	तमिल नाडु	13.4	14.01
4	गुजरात	15.5	13.3
5	हरियाणा	14.2	13.0
6	ओडिशा	15.8	12.5
7	राजस्थान	16.0	11.5
8	केरल	12.2	11.2
9	झारखंड	11.1	11.11

श्रोत: भारत वार्षिकी- 2025

2. **अवसंरचनात्मक विकास-** उत्तर प्रदेश एक्सप्रेसवे नेटवर्क मे देश मे पहले स्थान पर है। यहां पर 16000 किलोमीटर से अधिक का सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क है। विविध जिलों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए 22 हाईवे और 5 बड़े अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे हैं। जेवर अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट वर्तमान सरकार की एक बड़ी उपलब्धि है।

प्रमुख माल ढुलाई गलियारों के साथ उत्तर प्रदेश एक लॉजिस्टिक हब बन गया है। विभिन्न राज्यों में लॉजिस्टिक स्टेटस 2025 रैंकिंग मे भारत शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्य के रूप में एकसोम्पलर (Exemplar) राज्य का दर्जा प्राप्त है।

3. **औद्योगिक विकास-** उत्तर प्रदेश में 90 लाख से अधिक एमएसएमई इकाइयां है। इसके अतिरिक्त प्रदेश में रक्षा एवं रोगीकंडक्टर औद्योगिक कॉरिडोर का तेजी से विकास योगी

सरकार में हो रहा है। उत्तर प्रदेश के उद्योग विभाग के अनुसार उत्तर प्रदेश इलेक्ट्रॉनिक्स और विनिर्माण का पावर हाउस बन गया है। भारत में निर्मित होने वाले कुल मोबाइल फोन का 45 हिस्सा उत्तर प्रदेश का है। नोएडा में आईटी, इलेक्ट्रॉनिक्स और डाटा सेंटर, कानपुर में ड्रोन निर्माण, बुंदेलखंड में डिफेंस इंडस्ट्रियल कॉरिडोर जैसे विशेष क्षेत्र को बढ़ावा दिया जा रहा है।

4. **देसी एवं विदेशी विनियोगों को आकर्षित करने की नीति-** उत्तर प्रदेश में नवीन विनियोग का वातावरण बना है। वर्तमान में 14000 से अधिक मान्यता प्राप्त स्टार्ट-अप पर कार्य हो रहा है। इसमें उद्योगपतियों ने भारी निवेश किया है। उत्तर प्रदेश डाटा सेंटर नीति के अंतर्गत 200000 करोड़ के नए निवेश का लक्ष्य है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भारत का पहला ए आई सिटी 10700 करोड़ की लागत से विकसित किया जा रहा है। इन्वेस्ट उत्तर प्रदेश और निवेश मित्र सिंगल विंडो क्लीयरेंस सिस्टम के माध्यम से निवेश को प्रोत्साहित किया जा रहा है। इससे निजी क्षेत्र की औद्योगिक परियोजनाओं को लागू करने में मदद मिल रही है। योगी आदित्यनाथ ने विदेशी पूंजी को आकर्षित करने के लिए कई देशो का दौरा किया और उनके उद्योगपतियों द्वारा उत्तर प्रदेश में नवीन विनियोग किए जाने की सहमति दर्शायी गई है।

इन अपार विकास कार्यक्रमों के द्वारा उत्तर प्रदेश न केवल तेजी से विकसित हो रहा है बल्कि भारतवर्ष को शक्ति प्रदान भी कर रहा है यह निम्न संकेत अंकों से स्पष्ट है। भारत का सबसे बड़ा औद्योगिक बाजार

अ-देश में एम०एस०एम०आई० इकाइयों की उच्चतम संख्या

ब- इज ऑफ डूइंग बिजनेस मे दूसरा नंबर

5. राष्ट्रीय घरेलू उत्पाद में लगभग 19% योगदान देने वाली सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था।
6. सभी राज्यों में माल का पांचवा सबसे बड़ा निर्यातक।
7. शीर्ष पांच निर्माण राज्यो मे से एक सबसे बड़ा रेलवे नेटवर्क।
8. कोविड निवेश वातावरण के तहत नए क्षेत्रों पर ध्यान देना।

9. एक्सप्रेस-वे के किनारे मेक इन उ०प्र० को उत्प्रेरित करने के लिए कई औद्योगिक पार्क की योजनाएं।
10. स्थानीय उत्पादों को वैश्विक बाजारों में ले जाने वाली अद्वितीय योजनाएं। निवेश की सुविधा के लिए पुरस्कार विजेता एकल विंडो पोर्टल आदि। निवेश अनुकूल नीतियां 5.5 लाख करोड़ रुपए का राज्य बजट 10. से अधिक सालाना की दर से बढ़ा हैं। कोविड-19 के बावजूद घरेलू और विदेशी कंपनियों द्वारा 57000 करोड़ रुपए के निवेश की प्रतिबद्धता। उच्चतम रोजगार योग्य प्रतिभा वाले शीर्ष तीन राज्यों में से एक स्टार्टअप में घातीय वृद्धि।

ग्रामीण विकास- कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र का योगदान जीएसडीपी में कृषि की हिस्सेदारी वर्ष 2017-18 के 24: से बढ़कर 24.9: पर पहुंच गई है।

कृषि क्षेत्र की आंतरिक संरचना:

- फसलों का योगदानरू 67.4:
- पशुधन (Dairy/Livestock) का योगदानरू 24.7:
- वानिकी का योगदानरू 4.5:
- मत्स्य पालन एवं जलीय कृषिरू 3.5:

खाद्यान्न एवं फसल उत्पादन:

- उत्तर प्रदेश 737.4 लाख मीट्रिक टन खाद्यान्न उत्पादन के साथ देश में शीर्ष स्थान पर है।
- कुल खाद्यान्न उत्पादन में उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी लगभग 18.1: से अधिक है।
- गन्ने का उत्पादन 245.35 मिलियन टन रहा, जिससे राज्य देश का सबसे बड़ा गन्ना उत्पादक बना हुआ है।
- गेहूं उत्पादन 42.25 मिलियन टन और चावल उत्पादन 21.84 मिलियन टन दर्ज किया गया है।

तिलहन उत्पादनरू तिलहन उत्पादन वर्ष 2023-24 के 2.30 मिलियन टन से बढ़कर 2024-25 में 3.63 मिलियन टन हो गया है।

खाद्यान्न गन्ना, आलू और दूध के उत्पादन मे भारत मे शीर्ष पर रहने के साथ-साथ खाद्य प्रसंस्करण और बीज विकास पार्क्स पर ध्यान दिया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश में सकल घरेलू उत्पाद एवं शुद्ध घरेलू उत्पाद में वृद्धि दर-

उत्तर प्रदेश भारत के सबसे तेजी से विकसित हो रहे राज्यों मे से एक है और पिछले दशक में उसने स्वस्थ विकास पथ दिखाया है मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कुशल नेतृत्व मे उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था 9 वर्षों में दो गुने से अधिक बढ़ गई है। आज उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था देश की बड़ी अर्थव्यवस्था मे गिनी जाती है

प्रदेश सरकार की पारदर्शी नीतियां, समयबद्ध प्रोत्साहन एवं सेफ्टी स्टेबिलिटी स्पीड की गारंटी से उत्तर प्रदेश का सकल घरेलू उत्पाद तेजी से ऊपर की ओर बढ़ा है। उत्तर प्रदेश की अर्थ व्यवस्था का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में योगदान वर्ष 2016-17 में 8.6% से बढ़कर वर्ष 2024-25 में 9.1% तक पहुच गया है, यह बहुत बड़ी उपलब्धि है।

योगी आदित्यनाथ के कार्यकाल में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था का आकार वर्ष 2016-17 में 13.30 लाख करोड़ से दोगुना से अधिक बढ़कर वर्ष 25-26 में 30.5 लाख करोड़ के आंकड़े को पर कर दिया वर्तमान समय में प्रदेश की वर्तमान सरकार के कार्यकाल में सकल घरेलू उत्पाद के आंकड़े निम्न तालिका में प्रदर्शित है।

तालिका संख्या-2

उत्तर प्रदेश का वर्षवार सकल राज्य घरेलू उत्पाद

वर्ष	सकल राज्य घरेलू उत्पाद
2016-2017	13.30
2017-2018	14.76
2018-2019	16.22
2019-2020	17.45
2020-2021	16.83
2021-2022	20.28
2022-2023	22.96
2023-2024	26.67
2025-2026	30.25

श्रोत: आर्थिक सर्वेक्षण-उत्तरप्रदेश- 2025-26

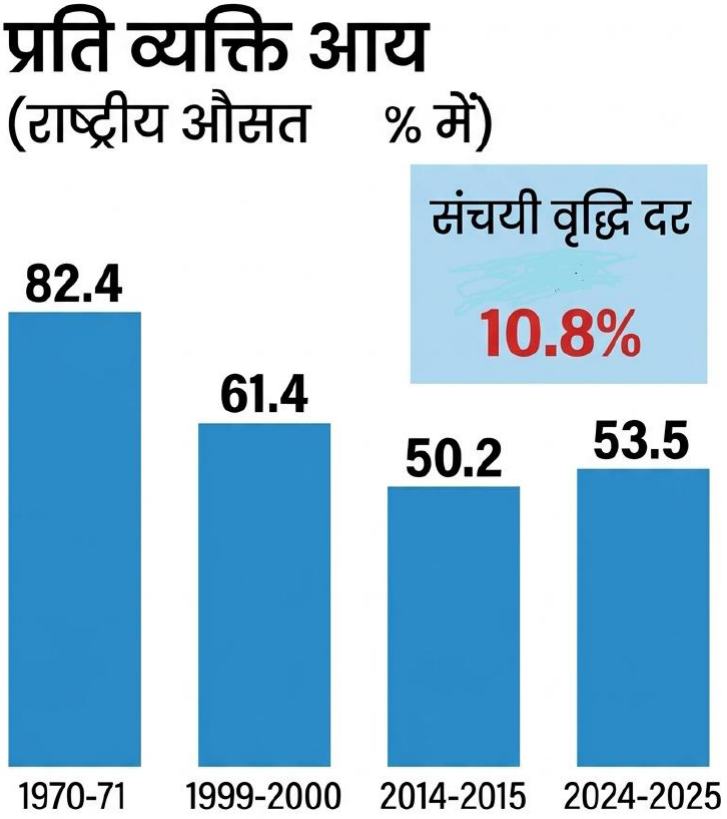
उत्तर प्रदेश में प्रति व्यक्ति आय-

उत्तर प्रदेश अत्यधिक जनसंख्या वाला प्रदेश है इसलिए सकल एवं शुद्ध राज्य के घरेलू उत्पाद बढ़ने के बावजूद इसकी प्रति व्यक्ति आय मे निरंतर गिरावट मिलती है। पृप्रति व्यक्ति आय प्रदेश में गरीबी के स्तर को प्रदर्शित करती है लेकिन वर्तमान सरकार के सकारात्मक प्रयासों के परिणाम स्वरूप प्रति व्यक्ति आय में निरंतर गिरावट के आंकड़े को परिवर्तित करके प्रति व्यक्ति आय मे वृद्धि का ऐतिहासिक बदलाव आया है। आजादी के समय उत्तर प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय भारतवर्ष के प्रति व्यक्ति आय के औसत से भी कम थी लेकिन यह निरंतर गिरती गई और वर्ष 2014-15 में राष्ट्रीय औसत का केवल 50.02: रह गई। वर्ष 2024 25 में एक उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ और प्रति व्यक्ति आय मे राष्ट्रीय स्तर पर वृद्धि दिखाई दी। यह प्रतिशत बढ़कर 53.5 हो गया और भविष्य में प्रति व्यक्ति आय के प्रतिशत कके बढ़ाने की संभावना है। उत्तर प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय वर्ष 2016-17 में 54564 रुपए थी जो 8 वर्षों में दोगुनी होकर वर्ष 24 25 में 109 844 रुपए तक

पहुंच गई है वित्तीय वर्ष 2025 26 में प्रति व्यक्ति आई 120 800 होने का अनुमान है। प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि का विवरण निम्न तालिका में प्रस्तुत है।

तालिका संख्या-03

प्रति व्यक्ति आय में राष्ट्रीय औसत के सन्दर्भ में प्रतिशत वृद्धि



उत्तर प्रदेश वित्तीय वर्ष 2025-26 मे रू०-2,01,241 करोड़ (लगभग रू०-2 लाख करोड़) का निर्यात करके देश का पांचवां सबसे बड़ा निर्यातक राज्य बन गया है। राज्य का कुल निर्यात में लगभग 5.2% का योगदान है, जिसमे 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' (ODOP) और नोएडा-ग्रेटर नोएडा क्षेत्र के इलेक्ट्रॉनिक्स मैन्युफैक्चरिंग हब की मुख्य भूमिका है।

प्रमुख निर्यातक जिले और क्षेत्र- उत्तर प्रदेश के प्रमुख निर्यातक जिले और क्षेत्रों का विवरण निम्नलिखित है-

गौतमबुद्ध नगर (नोएडा) रू प्रदेश के कुल निर्यात में करीब 49% (रू. 97,702 करोड़) का अकेला योगदान देता है। यहाँ मुख्य रूप से मोबाइल फोन, इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी और रेडीमेड कपड़ों का निर्यात होता है।

पारंपरिक निर्यात क्लस्टर:

a. मुरादाबादः पीतल और धातु के बर्तन

b. भदोहीः कालीन और दरी

c. आगराः चमड़े और जूते-चप्पल के उत्पाद

d. वाराणसीः रेशमी वस्त्र और हस्तशिल्प

e. कन्नौजः इत्र और सुगंधित उत्पाद

प्रमुख निर्यात क्षेत्र– उत्तर प्रदेश के निम्न का निर्यात करता है। इनका वर्षवार प्रतिशतवार विवरण निम्न तालिका में प्रस्तुत है–

तालिका संख्या-04

उत्तर प्रदेश के प्रमुख क्षेत्रों में निर्यात का प्रतिशत

वर्ष	मैंस का मास	सोना और अन्य कीमती धातुओं के आभूषण	चमड़े के जूते	कालीन (रेशम को छोड़कर)	हस्तनिर्मित रेडीमेड उत्पाद	मानव निर्मित रेशे	रेडीमेड कपास (सहायक उपकरण सहित)	लोहे और इस्पात के उत्पाद	एल्युमीनियम और एल्युमीनियम के उत्पाद	पॉलिश किया हुआ चमड़ा	तांबा और तांबे से बने उत्पाद
2012-13	12.77	5.73	4.41	4.30	2.77	4.30		4.52	1.96	3.01	2.06
2013-14	16.56	5.05	5.47	3.78	3.01	3.96		4.04	2.27	3.53	2.10
2014-15	16.63	4.63	6.09	4.62	3.83	3.94		4.44	4.31	3.87	2.82
2015-16	15.07	6.48	5.79	5.34	4.25	4.41		4.22	3.48	3.31	2.22
2016-17	14.87	7.21	5.58	5.22	5.04	4.51		4.15	3.39	2.92	2.74

Source: DGCIS, Exim Bank Research

1. इलेक्ट्रॉनिक्स और मोबाइल फोन देश के कुल मोबाइल फोन उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से आता है।

2. चमड़ा एवं फुटवियर

3. कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उत्पाद

4. कपड़े और परिधान (टेक्सटाइल)

5. डिस्टलरी उत्पाद: हाल के आंकड़ों के अनुसार डिस्टलरी उत्पादों के निर्यात में भी भारी बढ़ोतरी हुई है।

उत्तर प्रदेश निर्यात प्रोत्साहन नीति 2025-30:

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा लागू उत्तर प्रदेश निर्यात प्रोत्साहन नीति 2025-30 का मुख्य लक्ष्य वर्ष 2030 तक राज्य के निर्यात को दुगुना कर 50 अरब डॉलर तक पहुंचाना है। इस नीति के तहत निर्यातकों को सब्सिडी, माल ढुलाई सहायता और वित्तीय प्रोत्साहन के रूप में लगभग 882 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

प्रमुख लक्ष्य और उद्देश्य:

निर्यात लक्ष्य: वर्ष 2030 तक राज्य के निर्यात को $21 बिलियन से बढ़ाकर +50 बिलियन करना।

राष्ट्रीय हिस्सेदारी: देश के कुल निर्यात में उत्तर प्रदेश की हिस्सेदारी को 7.5% तक बढ़ाना।

प्राथमिकता वाले क्षेत्र: इलेक्ट्रॉनिक्स, हस्तशिल्प, इंजीनियरिंग, वस्त्र, कृषि, रसायन/औषधि, चमड़ा, खेल सामान, कांच/सिरेमिक, सेवा क्षेत्र और ODOP (एक जिला एक उत्पाद)।

मुख्य प्रोत्साहन और वित्तीय सहायता:

वार्षिक कारोबार वृद्धि इनाम: निर्यात कारोबार में सालाना वृद्धि के 1% के बराबर इनाम (अधिकतम रू०-20 लाख प्रति वर्ष प्रति निर्यातक)।

1. माल ढुलाई (फ्रेट) सब्सिडी
2. 20 फुट के कंटेनर के लिए रू०-20,000
3. 40 फुट के कंटेनर के लिए रू०-40,000 (या माल ढुलाई लागत का 30%, जो भी कम हो)
4. डिजिटल और विपणन सहायता डिजिटल मार्केटिंग और उत्पाद सूचीकरण के लिए रू०-1 लाख तक तथा वर्चुअल मेलो के लिए रू०-25,000 तक की सहायता।
5. अंतरराष्ट्रीय प्रमाणन: प्रमाणीकरण खर्च का 75% या अधिकतम रू०-25 लाख तक की छूट।

उत्तर प्रदेश के आर्थिक विकास की समस्यायें–

उ०प्र० के तीव्र आर्थिक विकास के बावजूद भी प्रदेश में गरीबी एवं बेरोजगारी की प्रमुख समस्यायें है। यद्यपि वर्तमान सरकार के कार्यकाल मे उ०प्र० मे गरीबी उन्मूलन, रोजगार सृजन एवं उच्च विकास दर मे उल्लेखनीय प्रगति दृष्टिगोचर होती है। नीति आयोग की एक नवीन रिपोर्ट मे उ०प्र० के करोड़ों लोगों को बहुआयामी गरीबी के दुचक्र से बाहर निकालने तथा रोजगार सृजन की योजनाओं की उपलब्धियों का वर्णन है। उ०प्र० मे कानून व्यवस्था में उल्लेखनीय सुधारो एवं औद्योगिक क्षेत्र के विकास, देशी एवं विदेशी विनियोगकर्ताओं का निवेश के प्रति बढ़ता आकर्षण, अवसंरचना एवं सेवा क्षेत्र के बुनियादी ढांचे में परिवर्तन से प्रदेश के एक टिलियन डालर की अर्थव्यवस्था का लक्ष्य विगत कुछ वर्षों तक पाने की उम्मीद है। तथापि उ०प्र० के विकास मार्ग में कुछ चुनौतियां भी हैं। इनका विवरण निम्नलिखित है–

1. **भारी जनसंख्या का दबाव**– उ०प्र० में अधिक जनसंख्या के कारण जनसंख्या का घनत्व व दबाव अधिक है। अधिक जनसंख्या के कारण प्रदेश में अनेको आर्थिक समस्यायें उत्पन्न होती है। प्रति वर्ष नयी जनसंख्या के लिए अतिरिक्त विकास प्रयास करने पड़ते हैं। अधिक जनसंख्या के कारण प्रदेश की प्रति व्यक्ति आय तथा बुनियादी ढांचे में परिवर्तन की समस्यायें प्रदेश के समक्ष आती है।
2. **कृषि की कम उत्पादकता**– पश्चिमी उ०प्र० को छोड़कर उ०प्र० के अन्य हिस्सों में कृषि उत्पादकता राष्ट्रीय स्तर से अभी भी काफी कम है। जिसके दुष्परिणामस्वरूप प्रदेश का आर्थिक विकास अवरुद्ध होता है।
3. **प्रशासनिक एवं संस्थागत कमजोरियां**– उ०प्र० में आज भी अनेकों प्रशासनिक और संस्थागत कमजोरिया विद्यमान है। इसके कारण जमीनी स्तर पर योजनाओं के क्रियान्वयन की समस्याये दिखलायी पड़ती है। विशेष रूप से ग्रामीण विकास और पंचायती राज्य में भ्रष्टाचार और लाल फीताशाही के कारण भी प्रदेश में विकास की गति धीमी रही है।
4. **जातिगत और क्षेत्रीय राजनीति**– उ०प्र० मे बहुत लम्बे समय से जातिगत राजनीति हावी रही तथा क्षेत्रीय स्तर पर राजनीति के कारण प्रदेश का समुचित विकास नहीं हो पाया कुछ प्रमुख

राजनीतिक दलों का ध्यान अपनी जाति तथा क्षेत्र तक सीमित रहा है जिसके कारण दीर्घकालीन आर्थिक नीतियों और विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में समस्यायें रही।

5. **पूर्व प्रदेश सरकारों में औद्योगिक विकास पर अधिक ध्यान न देना**– पूर्व प्रदेश की सरकारें मे गुण्डागिरी और अराजकता के माहौल के कारण भी विकास की दर धीमी रही। इसरो निजी क्षेत्र में निवेश कम हुआ। उद्योगपति उ०प्र० में विनियोग करने से घबराते थे जबकि वर्तमान सरकार की नीति देश और विदेश से पूंजी निवेश को बढ़ावा देकर औद्योगिक विकास करने की है।
6. **मानवीय पूंजी व सामाजिक बुनियादी ढांचे में कमी**– उ०प्र० के पूर्वी और उत्तर क्षेत्रों में मानव विकास का काम काफी पीछे रहा है। यह मानवीय पूंजी और सामाजिक बुनियादी ढांचे में कमी को प्रदर्शित करती है। यद्यपि पश्चिमी उ०प्र० में मानव विकास सूचकांक की स्थिति संतोषजनक है।

सुझाव–

उ०प्र० में पिछली सरकारों में माफिया राज्य का बोलबाला था जिसके कारण आर्थिक विकास का स्तर निम्न था। राज्य सरकार की वित्तीय समरयाओं ने अतीत में मानव तथा भौतिक अवसंरचना में निवेश की क्षमता को समिति किया है। परिणामस्वरूप विभिन्न संकेतों पर राज्य का प्रर्दशन निम्न रहा है। वर्तमान प्रदेश सरकार में विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ-साथ उ०प्र० के विभिन्न विकास संकेतों में तीव्र सुधार किया है। आज उ०प्र० की गिनती भारतवर्ष के कुछ विकास संकेतों के आधार पर दूसरे और तीसरे नम्बर पर है। यह प्रदेश के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए शुभ संकेत है। वर्तमान सरकार में राजकोषीय स्थिति में सुधार हुआ है एवं निजी सार्वजनिक वृद्धि से राज्य के आर्थिक विकास दर बेहतर हुई है। फिर भी प्रदेश के विकास में कुछ समस्यायें है। इनका तीव्र आर्थिक विकास के तीव्र समाधान होना आवश्यक है। इससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था अपने आर्थिक लक्ष्यों को शीघ्र प्राप्त कर लेती। प्रदेश के तीव्र आर्थिक विकास के लिए प्रमुख सुझाव निम्नलिखित है–

1. उ०प्र० के कई क्षेत्रों मे कृषि उत्पादकता राष्ट्रीय स्तर से कम है। यहा पर कृषि उत्पादकता को बढ़ाने के लिए अनेकों सम्भावनायें है।
2. उ०प्र० के विनिर्माण क्षेत्रों बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इससे औद्योगिक विकास के साथ-साथ कृषि और सहायक क्रियाओं का भी विकास होगा तथा ग्रामीण क्षेत्रों के श्रमिकों को अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध होगें।
3. उ०प्र० में अकुशल श्रमिकों की संख्या अधिक है। उनको प्रशिक्षण प्रदान करने की आवश्यकता है। जिसारो श्रम उत्पादकता में वृद्धि हो सके। कृषि श्रमिकों को नियोजित करने और उन्हें कौशल प्रदान करने के लिए विशेष योजनाओं आवश्यकता है।
4. उ०प्र० में निर्यात की भी बहुत सम्भावनाये है। अतः उ०प्र० में निर्यातो को बढ़ावा देने के लिए प्रभावी कदमों को उठाने की आवश्यकता है। कुछ विशेष क्षेत्रों जैसे चीनी उद्योग, हस्तशिल्प इत्यादि में निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्रो की स्थापना की जानी चाहिए।
5. देशी एवं विदेशी विनिर्माण कम्पनियों को प्रदेश में आर्कषित करने के लिए अनेकों छूटे प्रदेश सरकार को प्रदान करना चाहिए यथा औद्योगिक क्षेत्र के अवस्थपना सुविधायें कर छूट, ऋण सुविधा एवं विधुत सुविधा इत्यादि।

सन्दर्भ सूची

1. "National Multidimentional Poverty Index" (PDF). NITI Aayog.
2. "Unemployment Rate in India" (PDF). Directorate General of Employment (DGE). Retrieved 19 August 2024.
3. "Budget will take UP towards $1 trillion economy goal: Yogi". Times of India. Retrieved 8 May 2026.
4. "Uttar Pradesh Population 2022 | Sex Ratio & Literacy rate 2024". www.census2011.co.in. Retrieved 20 January 2024.
5. "Uttar Pradesh govt to provide free pulses, grain production jumped from 55.7 million tonnes (mt) in 2016-17 to nearly 72.5 mt in 2024-25". Business Standard. Retrieved 6 November 2025.
6. "From wheat to milk: Uttar Pradesh's agriculture clocks record output, boosts farm incomes". Times of India.
7. "About Uttar Pradesh: Tourism, Agriculture, Industries, Economy & Geography". India Brand Equity Foundation. Retrieved 5 July 2023.
8. "From Food Basket to Food Power: Uttar Pradesh's Agricultural Rebuild". Retrieved 14 February 2026.
9. "From wheat to milk: Uttar Pradesh's agriculture clocks record output, boosts farm incomes". Times of India. Retrieved 2 January 2026.